





बड़ी राशि माला



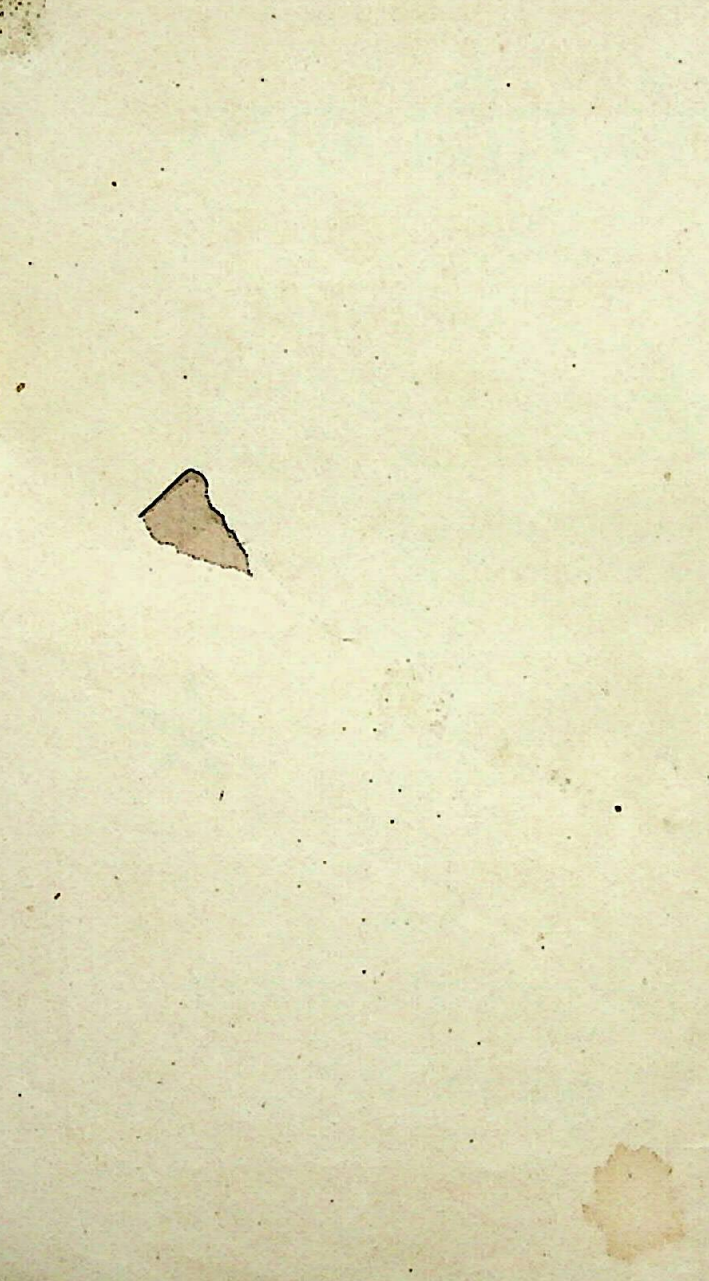
मेषरा



प्रकाशक

रतन एण्ड को० बुकसेलर्स,
दरीबा कलाँ, देहली ।

मूल्य २॥



* श्रीगणेशायनमः *

* बृहद राशिमाला *

—*o*—

अथ बारह राशि का फल

चू चे चो ला ली लु ले लो आ ।

इ उ ए पो वा वी वू वे वो ।

का की कु घ ड छ के को ह ।

हा हू हे हो डा डी डू डे डो ।

मा मी मू मे मो टा टी टू टे ।

टो प पी पु पे पो पा ष ।

र री रु रो ते ता ती तु तो ।

तो न नी नु वे नो जा जी जु ।

जे जो भ भी भु ध फ ठ मे ।

मो ज खी खु खे ग गा ।

गु गे गो स सी सु सी खो दे ।

दी दू थ झ ञ दे दो चा ची ।

मेषराशि

वृषराशि

मिथुनराशि

कर्कराशि

सिंहराशि

कन्याराशि

तुलाराशि

वृश्चिकराशि

धनराशि

मकरराशि

कुम्भराशि

मीनराशि

१—चू चे चो ला ला अश्विनी ली लु

ले लो आ भरणी । मेषराशि ।

२—इ उ ए कृतिका आ वा वी ।

बू रोहिणी वे वो पा दृषराशि ।

३—का की मृगशिरा कु घ ङ छ वृषराशि ।

के को हा ही पुनर्वसु मिथुन राशि ।

४—हु है डा पुष्य डी डु डे डा श्लेषा । कर्कराशि ।

५—म मी मू मे मघा मो ट टा दू टे

फाल्गुनी सिंहराशि ।

६—टो प पी उत्तरा फाल्गुन पु षा ण

ठ हस्त पे पो कन्याराशि ।

७—पे पौ रो री चित्रा रू रे रो ता स्वाती तो तू

ते जो विशाखा तुलाराशि ।

८—न नो नू ने अनुराधा नो जा जी

जु ज्येष्ठा वृश्चिकराशि ।

९—जे जो भा भी उत्तराषाढ़ खा खु खे

पूर्वाषाढ़ धन राशि ।

१०—मे भी जी उत्तराषाढ़ खो खु खे

ग गी श्रवण मकरराशि ।

११—गु गे धनिष्ठा गो स सी शतभिषा

सै द कुम्भराशि ।

१२—दी पूर्वा भाद्र दु थ भू ज उत्तरा भाद्रपद

दे दो चा ची रेवती मीनराशि ।

॥ अथ पुरुष राशिमाला प्रारम्भ ॥

—*o*—

मेष राशि का विचार

स्वामी इसका मंगल है । मुँह पर या बगल के नीचे
प्रथवा पैर में काली मिर्च की निशानी या काला तिल
होगा या जखम शरीर में होगा । पहिले उमर या आखीर
उमर में दौलतवर होगा । खरीद विक्री करेगा तो नफा
होगा । छठवें कन्याराशि पड़ा है । रोग इसको गर्मी से
घून का होता रहेगा । और वायु का जोर रहेगा हमेशा
हीं कभी कभी । सातवें तुलाराशि पड़ा है दो स्त्री करेगा
एक ब्याही दूसरी गुप्त । आठवें वृश्चिक राशि पड़ा है पौत
सकी पेट में विकार लोहू के दस्त से अथवा पेट के दर्द
से होगी । नवें धन राशि पड़ा है सफर में नफा होगा ।
गलवार इसके सब काम में भला है शुक्रवार इसको
सब काम में मना है । अगर शुक्र के दिन रोग होय जल्दी
प्राराम न होय तो एक अँगूठी अकीक की हाथ में रखे
तो बहुत अच्छा है जो नया चाँद देखे तो पहले सुख

चीज देख ले तो सारा महीना खुशी से गुजरे और धन पैदा होय । तीन चार जगह मौत का खतरा है । पहिले ३ वर्ष दूसरे १२ वर्ष में तीसरे २० वर्ष में चौथे ४५ वर्ष में इससे बच तो ६६ वर्ष जियेगा । मौत इसकी दिन की होगी । आगे परमेश्वर की मरजी है ।

वृष राशि का विचार

इस राशि का स्वामी शुक्र है । तीसरे आसमान पर रहता है । मुँह इसका गोल होगा । मीठा वचन बोलेगा । इसके पाँच में या कमर में काला तिल होगा पाँचवें कन्या राशि पड़ा है सन्तान बहुत होंगे । आठवें तुला राशि पड़ा है जब रोग होगा तब नेत्र का या गले का दर्द होगा । आगे छोटी उमर में नेत्र में बहुत दर्द होगा । सर्दी वादी होगी, वादी मिजाज में प्रगट होगी, इसको तीन औरतों से प्यार होगा और किसी से न होगा, स्त्री के वश में हो जायगा । आठवें धन राशि पड़ा है मौत इसकी गर्दन से या कान के दर्द से होगी । नवें मकर राशि पड़ा है सफर करे नफा होगा । दसवें कुम्भराशि पड़ा है बड़े आदमी से नफा थोड़ा, दस्त की बीमारी बहुत होगी । इसे स्त्री बहुत

प्यार करेगी या कहीं से बड़ा धन पावेगा । एक बार झूठे तोहमत से कैद होगा परन्तु तुरन्त छूट जावेगा । और एक बार घोड़े पर से भी गिरेगा । खून भी निकल्लेगा जो काम करे तो शुक्र के दिन करे किसी के पास जाय तो सन्मुख होके जवाब सब ल करे तो अच्छा है । कपड़ा सफेद पहिरे हाथ में सफेद नग की आँगूठी रखे तो भला होवे । और पानी का भय इसको होगा । ३० साल के अन्दर एक बार मिजाज इसका बहकेगा । नया चांद देखे तो सब्ज चीज देख ले तो सारा महीना खुशी से गुजरेगा । शादी करे तो स्त्री की राशि कर्क वृश्चिक मकर होय तो अच्छा हो । दिन दिन प्रीति बढ़ेगी । जो मिथुन तुला कुम्भ होगा तो बहुत दुःख पावेगा और इसको तीन जगह खतरा है पहिले १ वर्ष दूसरे ७ वर्ष में तीसरे ३० वर्ष में इससे बचे तो ७८ वर्ष ८ महीना १३ दिन जियेगा आगे राम जाने ।

मिथुन राशि का विचार

इसका स्वामी बुध है । दूसरे आसमान पर रहता है । इसका रंग काला होगा, रसीला मिजाज होगा । सबके साथ

हँसमुख बुद्धिमान और चेहरे पर शीतला का दाग मस्तक के
 काला तिल होगा, भाग्यवान होगा, कुछ एक खुश खुरा
 होगा। कर्जा किसी को देगा तो अटकेगा, धातु खान खरी
 तो घटी होगी। पाँचवें तुला राशि पड़ा है सन्तान होगी
 पर जिधगी नहीं, एक लड़की भाग्यवान होगी। छठे
 वृश्चिक राशि पड़ा है खून पेट से चलेगा। आँव लोह मरो
 कब्जियत बहुत होगा। कलेजे में गर्मी बहुत होगी, तुरन्त
 खफा हो जावेगा। सातवें धनराशि पड़ा है, स्त्री गुप्त होगी
 कहीं आस पास के गाँव का माल इसके हाथ लगेगा, कि
 औरत से इसको खतरा जहर बगैरह का है और औलाद
 औलाद देखेगा। दसवें मीन राशि पड़ा है, अच्छे २ व
 आदमियों से मुलाकात रहेगी। कोई काम नौकरी चाक
 बड़े आदमियों की करेगा तो नुकसान पावेगा। बैर बिते
 होता रहेगा, दोस्त मित्र सब इसकी बुराई करेंगे। सोमव
 का दिन इसको मना है, सोमवार के दिन कोई काम गु
 भी करे तो प्रगट हो जायगा। सब्ज नग की अँगूठी पहि
 तो तेज बल होगा। मुराद हासिल होगी, इसके पेट में ग
 बादी हमेशा रहेगी नया चाँद देखे तो दूसरे पुरुष का मु
 देख ले, सारा महीना खुशी से गुजरेंगा। राज दरबार

जाय तो दाहिने हाथ खड़ा होके जवाब करें तो जीत आये, इसको तीन जगह खतरा है। एक १८ साल में दूसरे-बीस साल में तीसरे ४५ साल के नजदीक, इन तीनों से बच जाय तो ८० साल ७ महीना ६ रोज का होकर मरेगा। आगे परमेश्वर की मर्जी।

कर्क राशि का विचार

इसके राशि का स्वामी चन्द्रमा है। पहिले आसमान पर रहता है, तरफ इसकी पश्चिम है। रंग काला होगा, सिर इसका छोटा होगा। अटारी पर से या ऊँची जगह से गिरने का खतरा भी है, बगल के तले या पैर के ऊपर या पेट के ऊपर इसको निशानी काली मिर्च की होगी। किसी का मोह-ताज न होगा उसको सन्तान बहुत होंगी पर आखिर में एक बेटा रह जायगा सो सपूत और नेकबख्त होगा। यशदायक होगा पेट और गर्दन में दर्द होता रहेगा, गले और कलेजे में धुकधुकी, बीमारी लोहू की होती रहेगी। अपनी स्त्री से सुख और पराई स्त्री से दुख पावेगा। मौत इसकी पेट के दर्द या पाँव के दर्द या नाभी के दर्दसे होगी। दूर का सफर करनेसे नफा होगा। राजा व अमीर की सोहबत

से चोरी की तोहमत लगेगी या दोस्त के साथ रंडीबाजी करेगा । इसको सोमवार भला है जो काम करेगा सो सिद्ध होगा । मंगल इसको सब काम में मना है । कपड़ा पहिरे तो शुक्र के दिन । सफेद नग की अँगूठी हाथ में रखे तो सुख पावे । ५ वें और सातवें वर्ष में पानी का भय होगा । मिजाज इसका वादी का है, नया चांद देखे तो सब्ज चीज़ देख ले तो सारा महीना खुशी से गुजरे और स्त्री करे तो राशि देख ले कर्क वृश्चिक धनराशि वाली से इसका जी हरा होगा । दिन दिन प्राति वढ़ेगी मिथुन राशि तुला राशि हो तो हानि होगी । इसको तीन जगह खतरा है । २ वर्ष में दूसरे १६ वर्ष में तीसरे ३० वर्ष में इससे बचे तो ७८ वर्ष ८ महीना १३ दिन जियेगा आगे राम जाने ।

सिंह राशि का विचार

इस राशि का स्वामी सूर्य है, चौथे आसमान पर रहता है । मिजाज इसका गर्म खुशक होगा । पसीना बहुत चलेगा क्योंकि सूर्य सब नक्षत्रों का राजा शाह है । इसका रंग लाल होगा, हमेशा मन प्रसन्न हँसमुख रहेगा । दो औरतों का दुष जरूर पियेगा थोड़ी प्यास नही रह सकेगा. रोग होगा तो

सर्दी बादी का, गर्दन या पेट पर काला दाग तिल का मिर्च का निशान होगा या काला दाग तिल का होगा । भाग्यवान् होगा विद्या पढ़ेगा पर भूल जायगा । चोरी इसके यहां होगी औलाद होगी पर सब न रहेगी कुछ थोड़ी रहेगी, रोग इसको बहुत भारी होगा, सदा रोगी रहेगा छोटा चार पांच का जानवर एक इसके घर में रहेगा स्त्री से थोड़ा सुख होगा, मृत्यु इसकी जल के किनारे या तीर्थ स्थान पर या देवता के स्थान पर होगी । सफर में नुकसान नहीं होगा एक औरत इसकी दुश्मन होगी उस औरत के मुँह पर या पैर पर निशान होगा । इसको इतवार का दिन अच्छा है जो काम करेगा सो सिद्ध होगा । सब्ज नग की अंगूठी हाथ में रखे या फिरोजी रखे बहुत भला होगा । नया चाँद देखे तो सब्ज नग की अंगूठी देख ले तो सारा महीना खुशी से गुजरे । बड़े आदमी के पास जाय तो बायें तरफ जाके खड़ा होके सबाल करे तो जीत आवे । किसी से दोस्ती करे तो मिथुन राशि या तुलाराशि या कुम्भ-राशि बहुत अच्छी है । फल प्राप्त होगा । जो मीनराशि कर्कराशि वृश्चिकराशि होगी तो नुकसान होगा, ये तीनों राशिवाले दुश्मन होंगे । तीन जगह खतरा है ५ वें वर्ष ३० वें वर्ष और ३७ वें वर्ष में

इससे बचे तो ७= वर्ष ६ महीने २ दिन का होगा तब मौत होगी । आगे परमेश्वर की मर्जी ।

कन्या राशि का विचार

जो इस राशि में पैदा होगा मिजाज उसका वादी का होगा, क्योंकि स्वामी इसका बुध है, दूसरे आसमान पर रहता है । मुँह इसका गोल होगा, पीला रंग चहरे का होगा, काला बाल, भौं दोनों मिली होंगी । इसके गरदन पर या बाजू पर या पीठ पर निशानी है जो निशानी दौलतवर की है जिससे उम्मीद न होगी उससे भी मुराद हासिल होगी । खरीद विक्री करने से नफ़ा होगा । भाई बन्धु से ऊपर की प्रीति होवेगी और सब खर्चा होगा इसके दो सन्तान होंगी । एक बेटा और एक बेटी अवश्य होगी । उस पेट की मुख देखेंगा तो रोग होगा पर सर्दी खांसी का होगा इसके पेट और सब अंगों में पीड़ा होगी । स्त्री इसकी दुष्ट स्वभाव की होगी, कभी लड़ाई कभी खुशी कभी नीचे कभी ऊँचे रखेगी मौत इसकी कनेजे के दर्द से अचानक होगी । सफ़र में नफ़ा होगा, छोटा उम्र में

सपना बहुत देखेगा, दुश्मन इसका जवरदस्त और जोरावर होगा दरबार में जाय तो हाथ बांध खड़ा होके जवाब करे तो जीत होवे । दिन इसको बुध भेजा है जो काम करेगा सो सिद्ध होगा । पंगल के रोज जो काम करेगा नुकसान होगा । जो किसी से दोस्ती करे या स्त्री करे तो कर्क वृश्चिक, मीन राशिवाले से फायदा हो । मिथुन तुला कुम्भ राशि होय तो नुकसान होगा । और राशि सामान्य जो नया चांद देखे तो सब्ज चीज देख ले सब्ज नग की अंगूठी पहिने तो सारा महीना खुशी से गुजरे इसको चार जगह खतरा है । पहिले २ वर्ष में दूसरे २८ वर्ष में तीसरे ३० वर्ष में चौथे पचास साल में, इससे बचे तो ७५ साल जीवेगा । आगे हरि इच्छा ।

तुला राशि का विचार

इस राशि का स्वामी शुक्र है, तीसरे आसमान पर रहता है, मिजाज इसका वादी का है । इस राशिवाले के मित्र बहुत होंगे, सपना बहुत देखेगा, तीन जगह से खतरा है घोड़े से, दरख्त से, ऊंचे महल से । सन्तान फलदायक होगी । पेट में कमर में शिर में वादी अग्नि अकसर होता

रहेगा पर अन्त में पेट के दुख से मरेगा, स्त्री पतिव्रता मिलेगी मृत्यु इसकी सुन्दर देवता के स्थान में होगी । सब स्फर में फलदायक होगी । इसको शुक्रवार सब कामों में भला है इतवार इसको सब कामों में मना है । इसकी दोस्ती सिंहराशि वाले से अच्छी वनेगी वृश्चिक, कन्या, मकरराशि सब कामों में मना है । इसको तीन जगह खतरा है पहिला ६ वर्ष में दूसरा ३५ वर्ष में तीसरा ४० वर्ष इससे जो बचे तो ६५ साल ६ महीना १६ दिन जियेगा आगे राम की मर्जी ।

वृश्चिक राशि का विचार

इस राशि का स्वामी मंगल है, मीठी जवान मुँह पर शीतला का दाग होगा और दाँत खुला हुआ होगा, कपड़ा सफेद पहिनेगा तो राजी होगा और भोजन थोड़ा खायगा । नया चाँद देखे तो लड़के का मुँह देख ले तो बहुत भला होगा पति इसका पंचम आसमान पर रहता है, माल बहुत पैदा करेगा, अपनी कमाई से नफा होगा । सन्तति पुत्र पुत्री दोनों होंगे और सुख मिलेगा । स्त्री आज्ञाकारी मिलेगी मृत्यु इसकी बहुत गेग करके होगी । लाभ दोस्ती से होगा

पास बैठने वाला दगावाजी करेगा, मिजाज सदीं का होगा कचहरी या बड़े आदमी के यहां जाय तो वायें जाके जवाब करे तो सब काम बन जायगा । नया चांद देखे तो औलाद का मुँह देख ले तो सारा महीना खुशी से गुजरे । स्त्री अगर वृश्चिक कन्या राशि वाली होय तो अच्छा होता है । भेष, सिंह, धन राशिवाली खराब है और राशि समान हैं । तीन जगह खतरा है । पहिला २ वर्ष मे, दूसरे २० वर्ष में तीसरे ३० वर्ष में इससे बचे तो ७० वर्ष ५ महीना जियेगा आगे परमेश्वर की मर्जी ।

धन राशि का विचार

इस राशि का स्वामी बृहस्पति है, छठवें आसमान पर रहता है । मीठी जबान होमी दयावान होगा, और तीन स्त्री से भोग करेगा और तीन ब्याह करेगा । चेहरे के ऊपर या बगल में या कमर के ऊपर काले तिलका निशान होगा । माल बहुत पैदा करेगा पर खर्च करेगा । सन्तान बहुत होगी पर एक बेटा रह जायगा । रोग इसको इश्क का होगा । यह पेट की पीड़ा से मरेगा स्त्री इसको नेकबख्त मिलेगी असली मृत्यु इसकी जल के किनारे बाग बगीचे के

सुन्दर स्थान में शुक्रवार के दिन होगी सफर में माल पैदा करेगा चाकरी में नफा होगी, अपने रोजगार में नफा होगा । दिन इसको गुरुवार भला है । खरीद विक्री करनेसे नफा होगा । सोमवार इसको सब कामों में मना है सुर्ख नग की अंगूठी हाथ में रखे तो खूब नफा पावे । जो स्त्री करे तो मिथुन राशि तुलाराशि कुम्भराशि होय तो इसको लाभ होवे । कर्क वृश्चिक राशि से परहेज करे । इसको तीन जगह खतरा है । पहिले आठ साल में दूसरे २० साल में तीसरे ३८ साल में इससे बचे तो ८५ साल २ मास जियेगा । आगे राम जाने ।

मकर राशि का विचार

स्वामी इस राशि का शनिश्चर है । सातवें आसमान पर रहता है चंहरा गोल, रंग साँवला तथा कद लम्बा होगा उसके हाथ में शम्भू की माला आन पड़ेगी । किसी को दुःख न देगा । झूठ से बहुत भयभीत होगा । गरदन के पास काली निशानी या काला दाग होगा एक बार स्त्री पर आशिक होगा । पर अपनी आबरू भी रक्खेगा । हुनरी

भी बहुत होगा । माल इसके हाथ में आवेगा । मुफ्त में कहीं गाँव पावेगा, सन्तान बहुत होगी पर खतरेदार होगी । रोग वादी का, पेट में, बाँह में दुःख होगा । स्त्री अच्छी गोरी मिलेगी । मृत्यु इसकी गर्मी खुशकी वादी से होगी । सफर में नफा होगा, जो उम्मीद दिल में करेगा धीरज से बराबर होगी । मित्रजन इसके दुर्भाव से दोस्ती करेंगे और शुक्रवार शनिवार दोनों दिन इसको भले हैं । लाल या जर्द नग जड़ी की अंगूठी को पहने तो भला होगा । यकीन होय तो बहुत नफा होगा, भोजन थोड़ा करेगा, कचहरी या बड़े आदमी के यहाँ जाय तो बायें तरफ जाके जवाब करे तो जीत आवे । नया चाँद देखे तो सब्ज चीज देख ले तो सारा महीना खुशी से गुजरे । स्त्री करे तो राशि देख ले, कर्क मीन राशि वाली होय तो माफिकन होगी । और राशि वाली से बचके रहना चाहिए । इसको तीन जगह खतरा है पहिले तीन साल में दूसरे १८ साल में तीसरे २० साल या ३५ साल में इससे बचे तो ६३ साल जियेगा । आगे परमेश्वर की मर्जी ।

कुम्भ राशि का विचार

स्वामी इसका शनिश्चर है, सातवें आसमान पर रहता

है । कद छोटा होगा, मीठी जवान रंग सांवला होगा । जो हाथ में आवेगा सो मित्र को खिला देगा । कभी तंग कभी खुलासा रहेगा, जब बीस बरस गुजरेगा तब इसके हाथ में माल आवेगा । दरख्त पर, अटारी पर, घोड़ा पर, दिवाल पर चढ़ना इसको मना है दांत इसका खुला होगा पर इसके सीने के ऊपर या बगल के नीचे काला दाग होगा । पैर के अंगूठे के तले भी होता है । सफर करे तो लाभ अच्छा होगा । अन्त में लक्ष्मी बहुत पैदा करेगा । भाई बहिन जियेंगे नहीं, सन्तान बहुत होंगी पर कन्या । रोग इसको सर्दी वादी का होगा, स्त्री दुर्भाव करेगी । पहली का नरम स्वभाव, दूसरी का गरम स्वभाव होगा । मौत इसकी स्त्री के छल से होगी । लम्बे कदवाली स्त्री से डरते रहना । खुशक जवान, शरीर तन्दुरुस्त होगा और जो काम मंगल के रोज करेगा तो नुकसान होगा । यह मर्द घोड़ा खरीदे तो नफ़ा होगा । जो बड़े आदमी के पास जाय तो दाहिने हाथ खड़ा होके जवाब करे तो जीत आवे । जो किसी से दोस्ती करे तो राशि देख ले मेष, सिंह, धन राशि होय तो लाभ होगा, वृश्चिक कन्या मकर इन राशि वालों से डरता रहे । इसको तीन जगह खतरा है । पहिले छोटी उमर में पानी का भय है, दूसरे पच्चीस वर्ष में

तीसरे ३० साल में इससे बचे तो ५० साल ७ महीना
जियेगा आगे ईश्वर जाने ।

मीन राशि का विचार

स्वामी इसका बृहस्पति है, छठवें आसमान पर रहता है । इसका चेहरा गोल होगा, लम्बी मीठी जबान होगी बहुत तंग गरीबी तौर से निर्वाह करेगा । सपना बहुत देखेगा कोई इसे तोहमत चोरी लगा देगा । सफर में माल पैदा करेगा सन्तान बहुत होंगी । बूढ़े भये पर सन्तान फलेगी, रोग इसको गरमी वादी का होता रहेगा । चार पांव का जानवर एक इसके घर में रहेगा । स्त्री चार करेगा, दिवाल के ऊपर से गिरेगा, नौकरी में नफा नहीं मिलेगा, अपने रोजगारमें नफा होगा और दिन बुधवार अच्छा नहीं । जो काम करेगा नुकसान होगा, भजन करे तो फायदा होगा । जो किमी सरदारके पास जाय तो बायें तरफ खड़ा होके जवाब करे तो जीत आवेगा । चांद देखे तो बूढ़े आदमी का मुँह देख ले सारा महीना खुशी से गुजरे स्त्री करे तो मीन, वृष, कन्याराशि होय तो प्रीति बढ़ेगी और मेष, मिथुन धन राशि होयेगी बड़ा दुःख पावेगा । इसको चार जगह खतरा है पहिले ४

साल में दूसरे १५ साल में तीसरे २० साल में चौथे ४० सालमें इससे बचा तो ८५ साल ७ महीना २० दिन जियेगा आगे परमेश्वर जाने । इति पुरुष राशिमाला समाप्त ।

—: * X X X * :—

॥ अथ स्त्रियों की राशिमाला ॥

मेष राशि का विचार

इस राशिवाली स्त्री का स्वभाव अच्छा होगा । रंग गेहूँ का सा होगा । किसी राजा या धनवान की स्त्री होगी सन्तान अधिक होंगी, मगर सुख तीन से मिलेगा । इसकी तीन स्थान में भय है ३ साल में अग्निका ७ सालमें कुत्ता काटने का और ३० साल में चोट लगने का इससे बचे तो ६८ साल की आयु होगी, आगे परमेश्वर जाने

वृष राशि का विचार

इस राशिवाली स्त्री का रंग सुन्दर होगा, पुरुष इसे अच्छा मिलेगा परन्तु दोनों में खटपट होती रहेगी आपने समान स्त्री से सदा बैर रखेगी । अपनी गुप्त बातें

किसी से नहीं कहेंगी । इसके नेत्र, गरदन और पांवमें पीड़ा रहेगी । कार्तिक का महीना इसे अच्छा है । पुत्र और कन्या से सुख मिलेगा । इसको तीन स्थान से भय है ७ वें साल में जल का, ११ वें साल में अग्नि का और एक बार ऊपर से गिरने का इससे बचे तो ७८ वर्ष की आयु होगी आगे परमेश्वर जाने ।

मिथुन राशि का विचार

इस राशिवाली स्त्री का शरीर पुष्ट गोरा वदन और नेत्र श्वाम होंगे । केश लम्बे, गरदन मिली हुई होगी, साथ ही भाग्यवान और सबसे मित्रता रखने वाली होगी । कभी कभी इसके शरीर में पीड़ा रहेगी । इसको चार स्थानमें भय है, पहिले ऊपर से गिरने का, ३ और ७ सालमें जल का और २४ साल में बीमारी का इससे बचे तो ७६ साल की आयु होगी । आगे परमेश्वर जाने ॥३॥

कर्क राशि का विचार

इस राशिवाली स्त्री का रंग श्याम, नाटा शरीर और पीठा वचन होगा । शत्रु इसके अधिक होंगे, कमर में पीड़ा रहेगी, हृदय और नाक पर तिल होगा । इसके तीन पुत्र

और दो कन्या होंगी । इसे तीन स्थान से भय है तीन वर्ष में अग्नि का ११ साल में जल का और १८ साल में विमारी का, इससे बचे तो ७० साल की आयु होगी आगे परमेश्वर की मर्जी ॥४॥

सिंह राशि का विचार

इस राशि वाली स्त्री का वर्ण गोरा, देह दुर्बल और नेत्र श्याम होंगे । इसके शरीर में पीड़ा रहेगी । गोरी स्त्री पुरुष से सदा बैर रखे, मुँह या हृदय पर तिल होगा । पुत्र अधिक और कन्या तीन होंगी । बड़, मस्तक चौड़ा, एक बार ऊपर से गिरेगी । इसको दो स्थान में भय है । ७ और ११ साल की विमारी से बचे तो ७० साल की आयु होगी आगे ईश्वर जाने ॥५॥

कन्या राशि का विचार

इस राशि वाली स्त्री का गोरा वर्ण, मीठी बोली होगी शरीर पुष्ट और अपने को सदा साफ रखेगी, सबसे मिलाप रखेगी । चतुर और परिश्रमी । बाल्यावस्था ही से लाभ होगा, पेट में दर्द रहेगा पाँच पुत्र और आठवें साल में ऊपर से गिरने का, और ३० वें साल में विमारी, वससे बचे तो ७० साल की आयु होगी आगे ईश्वर जाने ॥६॥

तुला राशि का विचार

इस राशि वाली स्त्री का स्वभाव वाल्यावस्था ही से अच्छा होगा । वचन मीठा रंग गोरा, मस्तक पर तिल होगा, शरीर में कभी कभी दर्द रहेगा. शनिवार इसको अच्छा है । मित्र कम और शत्रु अधिक होंगे, मिजाज गर्म और स्वप्न अधिक देखेगी । सन्तान ७ होंगी । इसको दो स्थान में भय है दूसरे साल में अग्नि का, ८ वें साल में जल का इससे बचे तो ८० साल की आयु होगी आगे ईश्वर जाने ॥७॥

वृश्चिक राशि का विचार

इस राशि वाली स्त्री का सुन्दर रूप, लाल वर्ण, चतुर और धनवान होगी । दाँत और पेट में दर्द रहेगा, गुरुवार इसको सब कामों में अच्छा है, गोरी स्त्री से बैर रखेगी । पीठ पर तिल होगा, चार पुत्र और दो कन्या होंगी । इसको तीन स्थान में भय है । - ४ और १३ साल में बीमारी का और तीसरे साल में ऊपर से गिरने का इससे बचे तो ६० साल की आयु होगी, और परमेश्वर जाने ॥८॥

धन राशि का विचार

इस राशि वाली स्त्री का गोरा वर्ण, गोल मुँह विश्वासी और क्रोधी । इसके पेट में दर्द रहेगा । यह स्त्रियों के साथ वैर रखेगी इस कारण इससे लोग शत्रुता करेंगे । बुधवार और चैत का महीना सब कामों में अच्छा है । ११ सन्तान होंगी, उनमें पाँच से सुख प्राप्त होगा, एक बार ऊँचे से गिरेगी । इसे दो स्थान में भय है पहिले दो साल में अग्नि का और दूसरे १० साल में चोट का, इससे बचे तो ६० साल की आयु होगी आगे ईश्वर जाने ॥६॥

मकर राशि का विचार

इस राशि वाली स्त्री का मुख छोटा, नेत्र अच्छे, रंग गेहूँ के समान और मुँह तथा हृदय पर तिल होगा, कमर पतली, पेट में दर्द रहेगा, गुरुवार इसको सब कामों में अच्छा है । सन्तान कई होंगी मगर सुख पाँच से मिलेगा, इसको तीन स्थान में भय है । ७ वें साल में ऊँचे से गिरने का, १६ वें साल में हाथ के दर्द का २० वें साल में घाव का इससे बचे तो ६० साल की आयु होगी आगे परमेश्वर की मर्जी ॥१०॥

कुम्भ राशि का विचार

इस राशिवाली स्त्री का शरीर पुष्ट, रंग गेहूँ के समान होगा। क्रोध बहुत करेगी, पतिव्रता और भाग्यवान होगी चालकों में स्नेह रखेगी, शरीर में पीड़ा रहेगी, शत्रु अधिक होंगे, सन्तान १२ होंगी मगर सुख ५ से मिलेगा। इसे दो स्थान में भय है। ६ साल में मकान पर से गिरने का, ३० साल में बीमारी का इससे बचे तो ८५ साल की आयु हाँगी। आगे परमेश्वर जाने ॥११॥

मीन राशि का विचार

इस राशिवाली स्त्री का मुँह गोल होगा, सदा प्रसन्न रहेगी मंगलवार इसको सब कामों में अच्छा है। स्वप्न बहुत देखेगी सन्तान कई होंगी मगर सुख पाँच से प्राप्त होगा इसे दो स्थान में भय है। ११ वें साल में जल का और ४२ वें साल में बीमारी का, इससे बचे तो ७० साल की आयु होगी। आगे परमेश्वर जाने ॥१२॥

* इति स्त्री राशिमाला समाप्त *

—————*o*—————

सिनेमा संगीत

अर्थात्

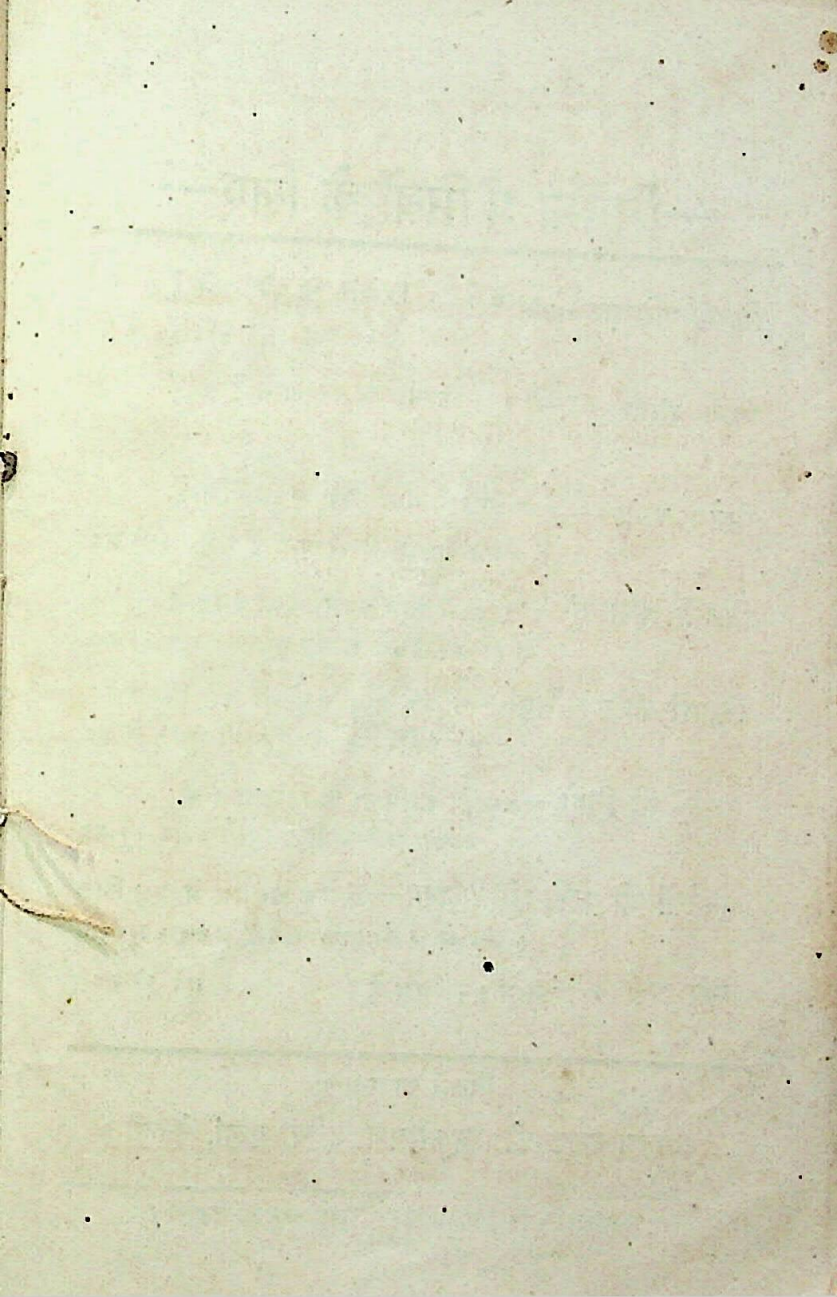
—गवैयों का गुरु—



जिसके अन्दर बोलती फिल्मों में गाये हुये ५५० से भी अधिक वह दिलकश गाने दर्ज हैं, जिन्हें क़रीबन २५० उत्तम फिल्मों में से चुना है तथा अशोककुमार, सविता देवी देविका रानी, कानन वाला, मास्टर सहगल, पहाड़ी, सान्याल, कज़न तथा ऐसे ही बहुत से मशहूर एक्टरों व ऐक्टरों ने गाया है जिनको एक बार पढ़ने तथा सुनने से आदमी तड़प जाता है और अपने आपको भूल जाता है। हारमोनियम पर गाने से तो इन गानों के आनन्द का पारावार नहीं रहता। यदि आपको फिल्मी गानों के पढ़ने व सुनने का ज़रा भी शौक है तो आज ही हमारी इस अद्भुत पुस्तक को मँगा कर देखिये। हमारा दावा है कि आप इस पुस्तक को देख कर अवश्य ही तड़प जावेंगे। ऐसी बहुमूल्य पुस्तक की कीमत सिर्फ १॥) रु० डाक खर्च सहित।

मिलने का पता—

रतन एण्ड को० दरीबा कलाँ, दिल्ली।



—सिनेमा प्रेमियों के लिए—

फिल्मी परिस्तान—इसमें १०० फिल्मों के पूरे गाने हैं।

मू० २॥) रु०

फिल्म संसार—इसमें ५० फिल्मों के पूरे गाने हैं।

मू० १॥॥) रु०।

सिनेमा संगीत—५५० फिल्मी गानों का संग्रह, जिन्हें

२५० उत्तम फिल्मों में से चुना है। मू० १॥) रु०

फिल्मी अप्सराएं—फिल्म में काम करने वाली एक्ट्रेसों

के हालात, चित्र सहित पुस्तक। मू० २) रु०

सितारों की कहानियां—एक्टर तथा एक्ट्रेसों की लिखी

हुई मनोरंजक कहानियां। मू० १॥) रु०

मजनों की चिट्ठी—बम्बई, कलकत्ता के स्टुडियोज की

आँखों देखी सच्ची घटनायें। मू० १) रु०

एक्ट्रेसों की फोटो की अलबम—प्रत्येक अलबम में २४ चित्र

हैं। १ नं० से ४ नं० तक प्रत्येक अलबम मू० ॥॥)

बड़ी अलबम—इसमें ५२ चित्र हैं।

मू० १) रु०।

मिलने का पता—

रतन एण्ड को० बुकसेलर्स, दरीवा कलां, देहली।

एक्सलसियर प्रिंटिंग वर्क्स, नई सड़क, देहली।

॥ श्री ॥

बृहत्-

होडाचक्र

भाषा टीका सहितम्

पं० देवेन्द्र ने

भाषा टीका से अलंकृत
किया ।

प्रकाशक—

देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, (बड़साबूला)
देहली

(इसका सारा हक स्वामित्व है)

मूल्य ३)

छप गया !

छप गया !!

छप गया !!!

क्या ?

फिल्मी तर्जों पर नया

बड़ा हारमोनियम गाईड

आजकल हर एक व्यक्ति को सिनेमा के गानों का हारमोनियम पर बजाने का बड़ा शौक है मगर उनको अब तक ऐसी कोई पुस्तक नहीं मिलती जिससे वे अपना शौक पूरा कर सकें। इसलिये हमने समय की परिस्थिति को निहारते हुए सिनेमा के नये नये गानों के सरगम बजाने के तरीके बहुत अच्छे रूप में लिखवा कर "हारमोनियम गाईड" छपवाया है, जिसमें पक्के राग-रागनियों का बजाना, तबला सितार बांसुरी बजाना और हारमोनियम की मरम्मत करना भी सिखाया गया है।

मूल्य केवल ॥), डाक व्यय अलग ।

नोट—१) के टिकट या १) का मनिआर्डर पेशगी आने पर पुस्तक बाहर भेज दी जावेगी।

पता—

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली

* श्रीगणेशाय नमः *

वृहत् होडाचक्रम् ।

भाषा टीका सहितम्

प्रणम्य भारतीं भक्त्या गणेशं च गजाननम् ।

समाहृत्यान्यग्रन्थेभ्यो होडाचक्रं विरच्यते ॥१॥

अर्थः—सरस्वती देवी तथा हाथी के समान मुख वाले गणेश जी को भक्ति सहित प्रणाम करके अनेक ग्रन्थों से संग्रह करके रचना करता हूँ ।

रवि, सोम, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र,
शनैश्चर यह सात बार हैं ॥२॥

प्रतिपदा १, द्वितीया २, तृतीया ३, चतुर्थी ४,
पंचमी ५, षष्ठी ६, सप्तमी ७, अष्टमी ८, नवमी ९,
दशमी १०, एकादशी ११, द्वादशी १२,
त्रयोदशी १३, चतुर्दशी १४, कृष्णपक्षे अमा-
वस्या ३० ॥ शुक्लपक्षे पौर्णमासी १५ इस
भाँति १६ तिथियाँ हैं ॥३॥

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण,
भाद्रपद, आश्विन (कुआर) कार्तिक, मार्ग-
शीर्ष [अग्रहन] पौष, माघ, फाल्गुन यह बारह

महीने १ वर्ष में होते हैं ॥ ४ ॥ वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर इति ऋतवः ॥५॥

मेष, बृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन इति द्वादश राशयः ॥७॥

अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती, इति अष्टविंशतीनक्षत्राणि ॥८॥

अर्थ—वसन्त ग्रीष्म आदि ६ ऋतु हैं ॥५॥ अयन दो हैं दक्षिणायन (१) उत्तरायण (२) ॥६॥ राशियाँ कुल १२ हैं मेष, बृष, इत्यादि ॥७॥ इस श्लोक में नीचे लिखे के अनुसार २८ नक्षत्र हैं—अश्विनी, भरणी आदि । किन्तु अभिजित नक्षत्र के क्रम से वर्तमान न रहने के कारण सत्ताईस ही नक्षत्र माने जाते हैं ॥८॥

विष्कम्भ, प्रीति, आयुष्यमान्, सौभाग्य, शोभन, अतिगंड, सुकर्मा, धृति, शूल, गंड वृद्धि,

ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात,
 वरायान्, परिघ, शिव, सिद्ध, साध्य, शुभ, शुक्ल,
 ब्रह्मा, ऐन्द्र, वैश्वति इतिसप्तविंशति योगाः ॥६॥

८र्थ—योग भी सत्ताईस ही हैं जिनके नाम विष्कम्भ,
 प्रीति आदि उक्त श्लोक में कहे अनुसार हैं ॥ ६ ॥

चू चे चो ला अश्विनी । ली लू ले लो भरणी
 आ ई ऊ ककृत्तिका । ओ वा वोवूरोहिणी । वे वो
 का की मृगशिरा । कू घ ङ छ आर्द्रा । के
 को हा ही पुनर्वसु । हू हे हो डा पुष्य । डी डू डे
 डो अश्लेषा । मा मी मू मे मघा । मो टा टी टू
 पूर्वाफाल्गुनी । टे टो पा पी उत्तरा फाल्गुनी ।
 पू ष ण ठ हस्त । पे पो रा री चित्रा । रू रे रो
 ता स्वाती । ती तू ते तो विशाखा । ना नी नू
 ने अनुराधा । नो या यी यू ज्येष्ठा । ये यो भा भी
 मूल । भू धा फाढा पूर्वाषाढा । भे भो जा जीउत्त-
 राषाढा । जू जे जो खा अभिजित् । खी खू खे खो
 श्रवण । गा गी गू गे धनिष्ठा । गो सा सी सू
 शतभिषा । से सो दा दी पूर्वाभाद्रपदा । दू थ भ
 ज उत्तराभाद्रपदा । दे दो चा ची रेवती । इति
 जन्मनक्षत्राणि ॥ १० ॥

महीने १ वर्ष में होते हैं ॥ ४ ॥ वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर इति ऋतवः ॥५॥

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन इति द्वादश राशयः ॥७॥

अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती, इति अष्टविंशतीनक्षत्राणि ॥८॥

अर्थ—वसन्त ग्रीष्म आदि ६ ऋतु हैं ॥५॥ अयन दो हैं दक्षिणायन (१) उत्तरायण (२) ॥६॥ राशियाँ कुल १२ हैं मेष, वृष, इत्यादि ॥७॥ इस श्लोक में नीचे लिखे के अनुसार २८ नक्षत्र हैं—अश्विनी, भरणी आदि । किन्तु अभिजित नक्षत्र के क्रम से वर्तमान न रहने के कारण सत्ताईस ही नक्षत्र माने जाते हैं ॥८॥

विष्कम्भ, प्रीति, आयुष्यमान्, सौभाग्य, शोभन, अतिगंड, सुकर्मा, धृति, शूल, गंड वृद्धि,

ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात,
वरायान्, परिघ, शिव, सिद्ध, साध्य, शुभ, शुक्ल,
ब्रह्मा, ऐन्द्र, वैश्रुति इतिसप्तविंशति योगाः ॥६॥

अर्थ—योग भी सत्ताईस ही हैं जिनके नाम विष्कम्भ,
प्रीति आदि उक्त श्लोक में कहे अनुसार हैं ॥ ६ ॥

च चे चो ला अश्विनी । ली लू ले लो भरणी
आ ई ऊ ककृत्तिका । ओ वा वोवूरोहिणी । वे वो
का की मृगशिरा । कू घ ङ छ आर्द्रा । के
को हा ही पुनर्वसु । हू हे हो डा पुष्य । डी डू डे
डो अश्लेषा । मा मी मू मे मघा । मो टा टी टू
पूर्वाफाल्गुनी । टे टो पा पी उत्तरा फाल्गुनी ।
पू ष ण ठ हस्त । पे पो रा री चित्रा । रू रे रो
ता स्वाती । ती तू ते तो विशाखा । ना नी नू
ने अनुराधा । नो या यी यू ज्येष्ठा । ये यो भा भी
मूल । भू धा फाढा पूर्वाषाढा । भे भो जा जीउत्त-
राषाढा । जूजेजो खा अभिजित् । खी खूखे खो
श्रवण । गा गी गू गे धनिष्ठा । गो सा सी सू
शतभिषा । से सो दा दी पूर्वाभाद्रपदा । दू थ भ
ज उत्तराभाद्रपदा । दे दो चा ची रेवती । इति
जन्मनक्षत्राणि ॥ १० ॥

अर्थ—जिस मनुष्य के नाम का पहिला अक्षर चू-चे-चा-
अथवा ला हो तो उसका नक्षत्र अश्विनी होता है तथा अश्विनी
नक्षत्र में जन्म लेने वाले पुरुष का नाम इन्हीं चार अक्षरों पर
रखना चाहिए । यह चार अक्षर क्रम से चार चरणों के हैं ।
इसी प्रकार ली-लू-ले-लो भरणी नक्षत्र के हैं । इन्हीं को जन्म
नक्षत्र कहते हैं ॥१०॥

अथ चन्द्रविचारः—

अश्विनी भरणी कृत्तिकापादेमेषः १, कृत्ति-
कायास्त्रयः पादा रोहिणी मृगशिरोद्धं वृषः २,
मृगशिरोद्धं आद्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनः ३,
पुनर्वसुपादमेकं पुष्यश्लेषान्तं कर्कः ४, मघात्र
पूर्वाफाल्गुनी उत्तरापादेसिंहः ५, उत्तरायास्त्रयः
पादा हस्तचित्राद्धं कन्या ६, चित्राद्धं स्वाती वि-
शाखापादत्रयं तुला ७, विशाखा पादमेकं अनु-
राधाज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ८, मूलचपूर्वाषाढा उत्त-
रापादं धनुः ९, उत्तरास्त्रयः पादा श्रवण धनि-
ष्ठाद्धं मकरः १०, धनिष्ठाद्धं शतभिषाभूर्वाभाद्र
पादत्रयं कुम्भः ११, पूर्वाभाद्रपादमेकं उत्तराभाद्र-
रेवत्यंते मीनः १२, इतिचन्द्रराशिः । पूर्व, आ-
ग्नेय,, दक्षिण नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर
ऐशान्य इति दिशाः ।

अर्थ—१ अश्विनी भरणी-कृत्तिका इनके एक चरण में मेष राशि का चन्द्रमा रहता है। कृत्तिका के तीन चरण, सम्पूर्ण रोहिणी, आधे मृगशिरा तक वृष का चन्द्रमा रहता है। सूर्यादि सब नौ ग्रह सब नक्षत्रों पर इसी तरह रहते हैं, परन्तु वे दिन विशेष तक ही रहते हैं। उनकी संख्या आगे लिखी है। इसी प्रकार श्लोक में लिखे अनुसार सब राशियों पर चन्द्रमा की भी स्थिति जानना। यह चन्द्र राशि विचार समाप्त हुआ। दिशाएँ आठ हैं, पूर्व, अग्निकोण-दक्षिण आदि।

अथ दिक्शूलः—

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वं दक्षिणां च दिशं गुरौ ।
सूर्यशुक्रपश्चिमायां बुधे भौमे तथोत्तरे ॥ इति ॥

अर्थ—२ शनिवार तथा सोमवार को पूर्व दिशा में, गुरुवार को दक्षिण में, रविवार, शुक्रवार को पश्चिम में और बुध, मंगल को उत्तर दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिए।

अथ चन्द्रवासस्थज्ञानम्—

मेषे चसिंहे धन पूर्वभागेवृषे चकन्या मकरेचयोम्ये
युग्मे तुलायां च घटेप्रतीच्यां कर्कालिमीनेदिशि
चोत्तरस्याम ॥ १ ॥ इति चन्द्रवासः ॥ सम्मुखे अर्थ
लाभाय दक्षिणेसुखसंपदः ॥ पृष्ठतोमरणं चैव
वामेचन्द्रे धनक्षयः ॥ २ ॥

अर्थ—३ मेष-सिंह-धन राशियों में। चन्द्रमा का निवास पूर्व दिशा में, वृष-कन्या-मकर राशियों में दक्षिण दिशा में मिथुन-तुला-कुम्भ राशियों में पश्चिम में, तथा कर्क-वृश्चिक-

मीन राशियों में चन्द्रमा का वास उत्तर दिशा में जानना चाहिये ॥ १ ॥ इतिचन्द्र वा न ज्ञा त्म । चन्द्रमा सामने हो तो धन लाभ, पीछे हो तो धन हानि, दाईं ओर हो तो सुख सम्पत्ति, तथा बाईं ओर हो तो मृत्यु कारक होगा ॥ २ ॥

अथ योगिनीवास ज्ञानम्

प्रतिपत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी ।
अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां तु सा स्मृता ३
त्रयोदश्या च पंचम्यां दक्षिणस्यां शिवाभ्रया ।
द्वादश्यां च चतुर्थ्याञ्च नैऋत्यां योगिनी स्मृता ॥ ४
चतुर्दश्यां च षष्ठ्यां च पश्चिमायां च योगिनी ।
पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायुकोणे तु पावती ॥ ५
दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवा भवेत् ।
ऐशान्ये दशं चाष्टम्यां योगिनी समुदाहृता ॥ ६ ॥
योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वाङ्मित्रदयिनी ।
दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखो मरणप्रदा ॥ ७ ॥

अर्थ—पड़वा तथा नवमी को योगिनी पूर्व दिशा में तथा एकादशी और तृतीया को अग्निकोण में रहती है ॥ ३ ॥ त्रयोदशी तथा पञ्चमी को दक्षिण में और द्वादशी व चतुर्थी को नैऋत्य कोण में रहती है ॥ ४ ॥ चतुर्दशी व षष्ठी को पश्चिम में तथा पूर्णिमा व सप्तमी को वायुकोण में रहती है ॥ ५ ॥ दशमी व द्वितीया को उत्तर में तथा अष्टमी व अमावस्या को ऐशान्य कोण में योगिनी रहती है ॥ ६ ॥ योगिनी बाईं ओर होने

से सुखदाई, पीछे होने से मनोरथ सिद्ध करने वाली, दाईं तरफ धन हारिणी तथा सन्मुख होने से मृत्यु कारक होती है ॥ ७ ॥

अथ भद्रावासज्ञानम्—

दशम्यां च तृतीयायां कृष्णपक्षे परे दले ।

सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥ ८ ॥

एकादश्यां च नुर्ध्यां च शुक्लपक्षे परे दले ।

अष्टम्यां पौर्णिमायां च विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥ ९ ॥

अर्थ—कृष्ण पक्ष की दशमी और तृतीया तिथि के उत्तरार्ध (अर्थात् पीछे के आधे भाग) में तथा सप्तमी और चतुर्दशी के पूर्वार्द्ध (आरम्भ के अर्ध भाग) में भद्रा रहती हैं ॥ ८ ॥ शुक्ल पक्ष की एकादशी और चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध में तथा अष्टमी और पूर्णिमासी के पूर्वार्द्ध में भी भद्रा रहती है ॥ ९ ॥

मेष मकर वृष कर्कटस्वर्ग

कन्या मिथुन तुला धनुनागे ।

कुम्भ मीन आलेकेसरि मर्त्ये

विचरति भद्रा त्रिभुवन मध्ये ॥ १० ॥

स्वर्गे भद्रा शुभं कुर्यात् पाताले च धनागमम् ।

मृत्युलोके यदा भद्रा सर्वकाये विनाशिनी ॥ ११ ॥

अर्थ—मेष-मकर-वृष-कर्क राशियों के चन्द्रमा में भद्रा को स्वर्ग लोक में, कन्या-मिथुन-तुला-धन राशि के चन्द्रमा में पाताल लोक में, तथा कुम्भ-मीन-वृश्चिक-सिंह राशि के चन्द्रमा,

में मृत्युलोक में भद्रा को जानना चाहिए । इसी प्रकार भद्रा सदैव तीनों लोकों में विचार करती है ॥ १० ॥ भद्रा का निवास स्वर्ग लोक में हो तो कार्य शुभ होवे, पाताल में हो तो धन प्राप्ति तथा मृत्यु लोक में हो तो सब सायं नष्ट होते हैं ॥ ११ ॥

सन्मुखे मृत्युलोकस्था पाताले च अधोमुखी ।
उर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा सन्मुखे मरणप्रदा ॥ १२

पूर्वे भद्राचतुर्दश्यामाग्नेय्यामष्टमीषु च ।
सप्तम्यां दक्षिणे चैव नैऋत्यां पौर्णिमासु च ॥ १३
पश्चिमायां चतुर्थ्याञ्च वायव्ये दशमी तिथौ ।

एकादश्यामुत्तरस्यामैशान्यां गिरिजातिथौ ॥ १४
भद्रामुखेषु यो याति क्रोशमेकं च नाधिकम् !

पुनरागमनं नास्ति नद्या हि सागराद्यथा ॥ १५

अर्थ—भद्रा मृत्यु लोक में हो तो सन्मुख, पाताल में हो तो अधोमुख, तथा स्वर्गलोक में हो तो उर्ध्वमुख जाननी चाहिये । सन्मुख भद्रा सदा मृत्यु करने वाली है ॥ १२ ॥ चतुर्दशी को भद्रा पूर्व दिशा में रहती है, अष्टमी को अग्निकोण में, सप्तमी को दक्षिण दिशा में, पूर्णिमा को नैऋत्य में ॥ १३ ॥ चतुर्दशी को पश्चिम में, दशमी को वायव्य में, एकादशी को उत्तर में, तृतीया को ईशान में भद्रा का निवास रहता है ॥ १४ ॥ जो पुरुष भद्रा के सन्मुख दूर तो क्या एक कोस भी जाता है तो उसका लौट आना उसी प्रकार असम्भव है जैसे समुद्र में से नदी का लौट आना ॥ १५ ॥ इति भद्रा विचार भलम ॥

मेषसिंहवृषा रक्ता कुञ्जरो वाहनं भवेत् ।

युग्मकन्याधनुः पीतमश्वसंवाहनं भवेत् ॥१६॥

नक्रमीनघटाः कृष्णमहिषो वाहनं भवेत् ।

अलिकर्कतुलाः श्वेतवृषभो वाहनं भवेत् ॥१७॥

रक्तचन्द्रे भवेद्युद्धं श्वेतचन्द्रे सुखी भवेत् ।

पीतचन्द्रे महालाभः कृष्णचन्द्रे महाभयम् ॥१८॥

अर्थ—मेष-सिंह-वृष राशियों के चन्द्रमा में स्थित संक्रान्ति का वर्ण लाल तथा वाहन हाथी होता है, मिथुन-कन्या-धन राशि में पीत वर्ण अश्व वाहन होता है ॥ १६ ॥ मकर-कुम्भ-मीन में वर्ण कृष्ण तथा वाहन महिष होता है । वृश्चिक कर्क-तुला राशि में वर्ण श्वेत तथा वाहन वृषभ जानना चाहिए ॥१७॥ चन्द्रमा रक्त हो तो युद्ध, श्वेत हो तो महालाभ, कृष्ण वर्ण हो तो महाभय प्राप्त होता है ॥ १८ ॥

अथ घातचन्द्रविचारः—

चन्द्रभूतग्रहा नेत्रा रसा दिग्वहिसागराः ।

वेदाः सिद्धिशिवार्काः स्युर्घातचन्द्रः क्रमान् नृणाम् ॥

रोगे मृत्युरणे भगं यात्राकाले तु बन्धनम् ।

विवाहे विधवा नारी घातचन्द्रफलं त्विदम् ॥२०॥

अर्थ—१-५-६-२-६-१०-३-७-४-८-११-१२ इस प्रकार यह चन्द्रमा मेष आदि राशि वाले मनुष्यों के क्रम से घातक होते हैं । जैसे मेष को १, वृष को ५ चन्द्रमा घातक हैं । इसी भाँति समस्त राशियों में चन्द्रमा का घात जानना ॥ १६ ॥

घातक चन्द्रमा में रोग होता हो तो मृत्यु शुद्ध होवे तो पराजय, यात्रा काल में बन्धन तथा विवाह होवे तो स्त्री विधवा हो जावे । इस तरह घात चन्द्रमा का फल है ॥ २० ॥

ग्रहों की भुक्तसंख्या वर्णनम्—

मासं शुक्रो बुधः सूर्यः साद्धर्मासं महीसुतः ।
गुरुरब्दं तमः साद्धर्मानिःसाद्धर्मायस्मृतः २१
तथा सप्तद्विदिनं राशौ तिष्ठति चंद्रमाः ।
ग्रहाणां राशिसंभोग एवमुक्तं विचक्षणैः ॥२२

अर्थ—शुक्र बुध सूर्य १ माह तक मंगल १॥ डेढ़ माह तक बृहस्पति १ साल तथा राहू १॥ डेढ़ साल तक और शनि २॥ ढाई साल तक एक राशि में रहते हैं ॥ २॥ उसी चाल से चन्द्रमा सवा दो दिन तक एक राशि में रहता है ग्रहों के राशि का भोग इस प्रकार पण्डितों ने कहा है ॥ २२ ॥

चन्द्रमा की द्वादश राशियों का फलम्—

आद्ये चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तायं द्वितीयके ।
तृतीये धनसंपत्तिश्चतुर्थे कलहागमः ॥२३॥
पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे संपत्तिरुत्तमा ।
सप्तमे राजसन्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥२४॥
नवमे धर्मलाभं च दशमे मानसेप्सितं ।
एकादशे सर्वलाभं द्वादशे हानिरेव च ॥२५॥

अर्थ—चन्द्रमा जन्म स्थान में हो तो लक्ष्मी प्राप्त हो, दूसरे स्थान में हो तो मन में आनन्द, तीसरे में धन, सम्पत्ति

चौथे में कलह ॥ २३ ॥ पाँचवें में ज्ञान की वृद्धि छटे में उत्तम सम्पत्ति, सातवें में सामान, आठवें में मरण ॥ २४ ॥ नवें में यश, धर्म, लाभ, दशवें में इच्छित कामना, ग्यारहवें में सब लाभ, तथा बारहवें स्थान में हो तो क्षान्ति पहुँचाने वाला होता है ॥ २५ ॥

हरिद्वयमैत्र हस्ता मृगाश्वौचादितिद्वयम् ।
यत्रायां रेवती शरत्ता निन्द्याद्रा भरणीद्वयं २६
मघा चित्रा विशाखात्रसर्पश्चान्ये च मध्यमाः ।
सर्वदिग्गमने हस्तपूषा च श्रवणो मृगः ॥ २७ ॥
सर्वनिद्विकरः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा ॥ २८ ॥

अर्थ—यात्रा करने के लिये श्रवण धनिष्ठ, अनुराधा-हस्त मृगाशिरा आश्विनि-पुनर्वसु-मुख्य रेवती यह नक्षत्र शुभ हैं। आर्द्रा-भरणी कृत्तिका-मघा-चित्रा-विशाखा-अश्लेषा नक्षत्र अशुभ तथा अन्य शेष नक्षत्र मध्यम हैं। हस्त-रेवती-श्रवण-मृगाशिरा नक्षत्र सब दिशाओं की यात्रा के लिये शुभ हैं। पुष्य नक्षत्र सबविधि सिद्धि दायक है जैसे विद्या प्राप्ति के लिये गुरु सब प्रकार से सिद्धि दायक होता है ॥ २६-२७-२८ ॥

वर्ग विचार और लग्नज्ञान

अ इ ऊ ए गरुड १, क ख ग घ ङ विडाल २,
च छ ज झ ञ सिंह ३, ट ठ ड ढ ण श्वान ४,
त थ द ध न सर्प ५, प फ ब भ म मूषक ६,
य र ल व मग ७, श ष स ह मेष ८, ॥ २९ ॥
स्ववर्गात् पंचमे शत्रुश्चतुर्थे मित्रसंज्ञकः ।

उदासीनस्तृतोये स्याद्वर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥३०॥
 द्विजन्मनिपंचमसप्तमगाश्चतुरष्टमद्वादशधर्मयुताः।
 धनधान्यहिरण्यविनाशकरारविराहुशनैश्चरभूमि
 सुताः। मीनाजौमार्धतिस्रःस्युर्घट्यःपादोनपंचकः।
 वृषकुम्भो तथा ज्ञेयः पादोनषट्पराणि च ॥३६॥

अर्थ—जिसके राशि नाम का प्रथम अक्षर अ इ उ ए हो उसका गरुड़ वर्ग होता है। इसी प्रकार यह सब आठ वर्ग जानने चाहिये ॥०॥ अपने वर्ग से पाँचवां वर्ग शत्रु चौथा मित्र तीसरा उदासीन कहलाता है। इस प्रकार वर्ग में भेद तीन प्रकार का कहा है ॥३०॥ द्विजन्मों को पांचवीं ७ वी, चौथी, ८ वी, १२ वी, ६ वी राशि पर प्राप्त हुए रवि-राहु-शनि-तथा मंगल स्वर्ण धन धान्य को नष्ट करते हैं। यह ग्रह गोचर देखने का प्रकार है ॥३१॥ मीन-मेष-लग्न साढ़े तीन घड़ी वृष-कुम्भ पौने पांच घड़ी और शेष अन्य लग्न पौने छः घड़ी तक ठहरती हैं। ऐसा जानना चाहिये ॥३२॥

कालवास विचार वर्णनम्—

अर्कोत्तरे वायुदिशां च सोमे
 भौमे प्रतोच्यां बुधनैः ऋते च ॥

ग्राम्ये गुरौ वह्निदिशां च शुक्रे ।

मन्दे च पूर्वे प्रवदन्ति कालम् ॥३३॥

अर्थ—रविवार को उत्तर दिशा में सोमवार को वायव्य दिशा में, मंगलवार को पश्चिम में, बुधवार को नैऋत्य कोण में बृहस्पति को दक्षिण में, शुक्र को अग्नि कोण में, शनि को पूर्व में

काल का योग होता है। इस काल योग में सम्मुख गमन नहीं चाहिए ॥ ३३ ॥

राशियों के स्वामी वर्णन—

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।
 बुधःकन्यामिथुनयोःप्रोक्तः कर्कस्य चन्द्रमा ॥३४॥
 जीवो मीनधनुःस्वामी शनिर्मकरकुम्भयोः ।
 सिंहस्याधिपतिःसूर्यः कथितोगणकोत्तमैः ॥३५॥
 ववश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा ।
 गरश्च वणिजोविष्टिः सप्तैवकरणानि च ॥३६॥
 नन्दा शुक्रे बुधे भद्रा शनौ रिक्ताकुजे जया ।
 गुरौ पूर्णातिथिर्ज्ञेया सिद्धि योगाः शुभेशुभाः ॥३७॥

अर्थ— मेष, वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल, वृष तुला राशि स्वामी शुक्र, कन्या मिथुन का बुद्ध और कर्क का स्वामी चन्द्रमा है ॥३४॥ मीन, धन राशि का स्वामी बृहस्पति, मकर, कुम्भ का स्वामी शनि, और सिंह राशि का स्वामी सूर्य है ॥ ३५ ॥ वव, बाल, कोलव, तैतिल, गर. वणिज, विष्टि यह सात करण हैं ॥३६॥ शुक्रवार को नन्दा, बुद्ध को भद्रा, शनि को रिक्ता, मंगल को जया, बृहस्पति को पूर्णा तिथि हो तो इनमें सिद्धि योग होता है जो शुभ है ॥३६॥

अथ दिनमान विचारः—

त्र्यंगुलं शंकुमादाय आयारामसमन्विता ।
 चतुः षष्ठिहरेद्भागं लब्धं घटिपलात्मकम् ॥३८॥

अर्थ—तीन अंगुल प्रमाण अंकुश लेकर छाया नापे । उसमें तीन मिलावे जो प्राप्त हो उसका भाग ६४ में देवे । भजन फल को घड़ी माने तथा शेष में ५० का गुणा करके पुनः उसी अंक का भाग दे और उसके भजनफल को पल मानें ॥ ३८ ॥

स्त्री को नवीन वस्त्र धारण करने का मुहूर्तः—
हस्तादिपंचकेऽश्विन्याँ धनिष्ठायाँ च पूषणि ।
गुरौ शुक्रे बुधे वारे धार्य स्त्रीर्भिनवाम्बरम् ॥ ३९ ॥

अर्थ—हस्त से आदि के पाँच नक्षत्र और अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती इन नक्षत्रों में बुध वृद्धस्पति शुक्रवार को स्त्रियों को नये वस्त्र धारण करना चाहियें ॥ ३९ ॥

अथ पुरुष नवीन वस्त्र धारण मुहूर्तः—
लग्ने मीने च कन्याँ मिथुने च वृषे शुभः ।
पौष्णे पुनर्वसुद्वंद्वे राहियुत्तरभेषु च ॥ ४० ॥

अर्थ—मीन, कन्या, मिथुन, वृष इन लग्नों में रेवती पुनर्वसु, पुष्य रोहिणी तथा तीनों उत्तरा नक्षत्रों में नवीन वस्त्र धारण करना चाहिये ॥ ४० ॥

अथ नवान्न भोजन मुहूर्तः—
नवान्नभोजने ग्राह्यं वस्त्रेप्रोक्तमशेषतः ।
वराधिकासूर्यसोमो नक्षत्रः श्रवणे मृगः ॥ ४१ ॥

अर्थ—नवीन वस्त्र धारण करने के लिये जो नक्षत्र ऊपर कहे हैं विशेष करके उन्ही बार तथा नक्षत्रों में तथा श्रवण मृगशिरा नक्षत्रों में रविवार सोमवार को भी नया अन्न ग्रहण करना चाहिये ॥ ४१ ॥

अथ पंचक कथनम्—

धनिष्ठादि पंचकं त्याज्यं तृणकाष्ठादिसंग्रहे ।
त्याज्यादक्षिणदिग्यात्रा गृहाच्छादनमेव च ॥४२॥

अर्थ—धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र पंचक कहलाते हैं । इनमें तृण काष्ठ आदि का संग्रह न करे, दक्षिण दिशा में न जावे, तथा घर को न जावे, तथा घर को न बनवावे न छान डलवावे ॥४२॥

तैल लगाने का विचार और परिहार कथन—

तैलाभ्यंगे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृत्तिः ।
बुधे धनं गुरौ हानिःशुक्रेदुःखंशनौ सुखम् ॥४३॥
रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका ।
गोमयं शुक्रवासरे च तैलाभ्यंगे न दोषभाक् ॥४४॥

अर्थ—रविवार के दिन तैल लगाने से ज्वर, सोमवार को शोभा, मंगल को मृत्यु, बुध को धन प्राप्ति बृहस्पति को हानि, शुक्रवार को दुःख तथा शनिवार को तैल लगाने से सुख प्राप्त होता है ॥४३॥ रविवार को तैल में पुष्प, बृहस्पति वार को दूर्वा, मंगल को मृत्तिका, शुक्र को गंवर डाल कर लगाने से इन त्याज्यवारों में भी कोई दोष नहीं होता ॥४४॥

मृत्युप्रद योग वर्णन—

नन्दा सूर्ये च भौमे च भद्रा भार्गवचंद्रयोः ।
बुधेजया गुरौ रिक्तौ शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥४५॥

अर्थ—रविवार और मंगल को नन्दा तिथि हो, सोम शुक्र

को भद्रा तिथि, बुद्ध को जया, बृहस्पति को रिक्ता तथा शनि को पूर्णा तिथि होवे तो मृत्युयोग होता है ॥४५॥

एक संग यात्रा का भेद वर्णन—

पितापुत्रौ न गच्छेतां न गच्छेद भ्रातरद्वयम् ।
नवाङ्गनास्त्रयो विप्रा न गच्छन्तु तथैव च ॥४६॥

अर्थ—पिता पुत्र को, दो सहोदर भाइयों को, नौ स्त्रियों को तथा तीन ब्राह्मणों को भी एक साथ यात्रा नहीं करनी चाहिये ॥४६॥

अमृतसिद्धियोग वर्णन—

हस्तः सूर्ये मृगः सोमे वारे भौमे तथाश्विनी ।
बुधे मैत्रगुरौ पुष्यो रेवती भृगुनन्दने ॥४७॥
रोहिणी रविपुत्रे च सर्वेसिद्धिप्रदायकाः ।

अयंचामृतसिद्धि स्याद्योगः प्रोक्तःपुरातनैः ॥४८॥

अर्थ—रविवार को हस्त, सोमवार को मृगशिरा मंगल को अश्विनी, बुद्ध को अनुराधा, बृहस्पति को पुष्य, शुक्र को रेवती तथा शनिवार को रोहिणी नक्षत्र होवे तो उनमें सब सिद्धियों को देने वाला अमृतसिद्धि नामक योग पूर्व पण्डितों ने बताया है ॥४७॥

अथ ग्रामवासफलवर्णनम्—

ग्रामस्य च भवेदक्षंतदाद्याः सप्त मस्तके ।
पृष्ठे सप्त हृदि ह्येवं पादयोः सप्त तारका ॥४९॥

मस्तके च धनी मान्यः पृष्ठे हानिश्चनिर्धनः ।
हृदये सुखसंपत्तिः पादे पर्यटनं भवेत् ॥५०॥

अर्थ—ग्राम का जो नक्षत्र हो उसके आदि के साथ नक्षत्र मस्तक पर धरे, सात पीठ पर. सात हृदय पर तथा सात पैरों पर धरे ॥ ४६ ॥ वर्तमान नक्षत्र मस्तक पर होवे तो ग्राम में बसने वाला धनी मान्य होता है । पीठ पर हो तो हानि और निर्धन, हृदय पर हो तो सुख-संपत्ति वाला तथा पैरों पर हो तो घूमने वाला होता है ॥५०॥

अन्य मत से ग्रामवास फल वर्णन—

ग्रामस्यभं समारभ्य सूर्यभं यत्र तिष्ठति ।

पंचमे द्वादशे वापि चैकोनविंश विंशयोः ॥५१॥

एकविंशश्चतुर्विंशत् षड्दशस्थैव च ।

एतानि सप्तऋक्षाणि ग्रामेनासुखदायकम् ॥५२॥

अर्थ—ग्राम के नक्षत्र से सूर्य के नक्षत्र तक गिने । ५ वाँ, १२ वाँ १६ वाँ, २० वाँ, २१ वाँ २४ वाँ, २६ वाँ, यह सात नक्षत्र ग्राम में जाकर बसे तो सुख नहीं होता ॥५२॥

अथ वधू प्रवेशमुहूर्तः—

हस्तत्रये ब्रह्मयुगे मघायां पुष्यधनिष्ठाश्रवणोत्तरेषु
मूलानुराधाहयरेवतीषु स्थिरेषु लग्नेषु वधूप्रवेशः

अर्थ—हस्त से ३ नक्षत्र रोहिणी, मृगशिरा, मघा, पुष्य, धनिष्ठा, श्रवण, तीनों उत्तरा, मूल, अनुराधा, अश्विनी, रवती इन नक्षत्रों में स्थिर लग्न में वधू को प्रवेश कराना चाहिये ॥५३॥

रोगी के स्नान करने का सुहृत्—

आश्लेषाद्वितयं स्वाती रोहिणी च पुनर्वसुः ।
रोगिस्ताने रेवती च वर्जयेदुत्तरात्रयम् ॥५४॥
रिक्ता तिथौ चरे लग्ने वारे च रविभौमयोः ।
स्नानं चरोगिणां प्रोक्तं द्विज भोजनमंशुतम् ५५

अर्थ—आश्लेषा, मघा, स्वाती, रोहिणी पुनर्वसु, रेवती तीनों उत्तरा यह नक्षत्र, चर लग्न, स्वाती तथा विवार मंगलवार को ब्राह्मण को भोजन कराकर तभी रोगी को स्नान काना चाहिये । क्योंकि उक्त सब इन कार्य में वर्तित हैं ॥५४-५५॥

मुख्य २ तिथियों में निषिद्ध कार्य वर्णन

षष्ठेषु तैलं पलमष्टमीषु क्षौद्रक्रिया न वचः चतुर्दशीषु ।
स्त्रीमेवननष्टकलासु पुंसामायुःक्षयार्थं मुनयो वदन्ति

अर्थ—दूध को तैल तथा अष्टमी को माँन नही खावे । चतुर्दशी को क्षौद्र तथा अमावस्या को स्त्री प्रसंग नही कराना चाहिये । जो करते २ उनकी आयु नष्ट हो जात है ॥ ५६ ॥

प्रस्थान में वस्तु रखने का विधान—

यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मतुञ्च स्थापयेत्फलम् ।
विप्रादिक्रमतः सर्वम्बर्णं धन्याम्बरादिकम् ॥५७॥

अर्थ—प्रस्थान में ब्राह्मण को यज्ञोपवीत, क्षत्रिय को शस्त्र, वैश्य को मिठाई तथा शूद्र को फल रखना चाहिये । सोना-वस्त्र तथा धान्य सब कोई प्रस्थान में रखें ॥ ५७ ॥

प्रस्थान में दिन प्रमाण वर्णन—

राजादशाहे पञ्चाहमन्येपि प्रथितो वसेत् ।

अङ्गप्रस्थान सम्पूर्णं वस्तुप्रस्थानमर्द्धकम् ॥५८॥

अर्थ—राजा को प्रस्थान करने पर १० दिन तथा औरों को ५ दिन तक का मुहूर्त उपयोगी रहता है । तत्पश्चात् वह मुहूर्त नष्ट हो जाता है । स्थान छोड़कर प्रस्थान में रहने से मुहूर्त का पूरा फल मिलता है और पदार्थ के रखने से मुहूर्त का फल आधा ही रह जाता है ॥५८॥

अङ्ग फड़कने का फलाफल वर्णन—

पृथ्वीलाभो भवेन्मूर्ध्नि ललाटे रविनन्दन ।

स्थानवृद्धिं समायतिभ्रू नसोः प्रियसंगमः ॥५९॥

मृत्युलब्धिश्चाक्षिदेशे दृगुपान्ते धनागमः ।

उत्कराठोपगमे मध्ये दृष्टं राजन्विचक्षणैः ॥६०॥

दृग्वन्धने संगरे च जयं शीघ्रमवाप्नुयात् ।

योषिल्लाभोऽपांगदेशे श्रवणान्तेप्रियश्रुतिः ॥६१॥

नासिकायां प्रीतिसौख्यं प्रियातिरधरोष्ठयोः ।

कराठे तु भाग्यलाभः स्याद्भोगवृद्धिरथासयोः ॥६२॥

सुहृच्छ्रेष्ठश्च बाहुभ्याम् हस्ते चैव धनागमः ।

पृष्ठे पराजयोत्सेधो जयो वक्षःस्थले भवेत् ॥६३॥

कुक्षिभ्यां प्रीतिरुद्दिष्टा स्त्रियाः प्रजननं भगे ।
 स्थानभ्रंशो नाभिदेशे अन्ये चैव धनागमः ॥६४॥
 जानुसन्धौ परः सन्धिर्वलद्विर्भवेन्नृपः ।
 एकदेशे भवेत्स्वामी जंघाभ्यां रविनन्दन ॥६५॥
 उत्तमस्थानमाप्नोति पद्भ्यां प्रस्फुरणे नृप ।
 अलाभश्चाध्वगमनं भवेत्पादतले नृप ॥६६॥
 लाञ्छनं पीठकं चैव ज्ञेयं स्फुरणवत्तया
 विपर्ययेण विहितः सर्वस्त्रीणां विपर्यययः ॥६७॥

अर्थ—मस्तक फड़कने से पृथ्वी लाभ, ललाट फड़कने से स्थान की वृद्धि, भौंह से प्रिय दर्शन, नेत्र से धन लाभ, कण्ठ से राज्य प्राप्ति, दृग्बन्धन से युद्ध में जाय, अपांग देश से स्त्री लाभ, कर्णान्तक से मित्र का सन्देश, नासिका से प्रीति, मुख-अधर से प्रिय वस्तु लाभ. कण्ठ से ऐश्वर्य, कन्धे से भोग वृद्धि, दोनों भुजाओं से मित्र की भेंट, दोनों हाथ से लाभ, पीठ से पराजय, जंघा और कोख से जय, इन्द्रिय से सन्तान लाभ, नाभि से स्थान नाश, आँत से धन प्राप्ति, धनु की सन्धि से देश-राज्य की प्राप्ति और तालुओं के फड़कने से यात्रा और हानि प्राप्ति होती है। स्त्रियों में शृकुटी के मध्य और पीठ फड़कने से पुरुष के ही समान फल जानना चाहिये तथा शेष सब अंगों से पुरुष विपरीत फल जानना चाहिये।

अथ गर्भिणी प्रश्न—

तत्प्रश्नलग्ने रवि जीव भौमः । तृतीयसप्त नव

पंचमेव ॥ गर्भे पुमान्वै ऋषिभिः प्रणीतश्चाऽन्य
ग्रहे स्त्री वबुधैः प्रणीता ॥६८॥

अर्थ—प्रश्न की लग्न से तीसरे, सातवें, नवें तथा पांचवें स्थान में सूर्य तथा बृहस्पति स्थित हों तो पुत्र और उक्त स्थानों में अन्य कोई ग्रह स्थित हो तो कन्या का उत्पन्न होना कहना चाहिये ॥६८॥

अङ्क प्रश्न तथा फल वर्णन—

अष्टोत्तरे शतांकेषु प्रष्टा त्वेकं वदेल्लिखेत् ।
तस्मिन् द्वादशाभिर्भक्तं शेषं नैव शुभाशुभम् ॥
एकादुर्गा सप्तके वै विलम्बश्चांगे तुर्ये दिक्षु भूतेषु
नाशः रुद्रे सिद्धियुग्मके वृद्धिरुक्ताशीघ्रं कार्यं स्यात्
त्रिषड्द्वादशेषु ॥७०॥

अर्थ—प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ १०८ के अन्तर्गत कोई अंक लिखावे अथवा कहावे । उसमें १२ का भाग देकर १, ६ या ७ बचे तो कार्य देर में सिद्ध होवे । यदि ८, १०, ५ बचें तो कार्यनाश हो । ११ बचने से सिद्ध, २ बचने से वृद्धि । ३, ६, १२ बचने से शीघ्र कार्य सिद्ध होवे ऐसा फल बतलाया जाता है ॥६९-७०॥

॥ इति समाप्तम् ॥

नई नई पुस्तकों का संक्षिप्त सूचीपत्र

तूफान मेल	...	॥)	साधुन साजी	...	१)
हवाई जहाज	...	॥)	कबीर दोहावली		१=)
विदुषी चपला		१=)	तुलसीदास दोहावली	...	१=)
वीर अभिमन्यु	...	=)	मीराजी के गीत	...	१=)
शिवाजी मरहटा	...	=)	राशिमाला		=)॥
वीर बन्दा बैरागी	...	=)	आरती संग्रह	...	=)॥
फुदकती मैना	...	=)॥	कबीर भजन माला	...	=)॥
भक्ति सागर	...	=)॥	भजन रामायण	...	=)॥
सत्यनारायणव्रत कथा भाषा	=)॥		भजन कीर्तन	...	=)॥
सत्यनारायण भाषा टीका	१=)		व्योपार	...	॥)
हिन्दी अंग्रेजी छोटी	...	१=)	फिल्मी कीर्तन	...	=)॥
“ ” बड़ी	...	१)	भजन मीराबाई	...	=)॥
वीरबल विनोद	...	=)॥	असली पूरनमल बालकराम कृत	२)	
“ ” बड़ा	...	१)	असली गोपीचन्द बालकराम कृत	३)	
हँसी का गोलगप्पा	...	=)॥	किस्स! तोता मैना सम्पूर्ण	२)	
शेखचिल्ली	...	=)॥	अली बाबा चालीस चोर	३)	
हँसी का रसगुल्ला	...	=)॥	बालपत्र बोध	...	१)
गोपीचन्द भरथरी	...	१)	सूर्यकान्त वेदान्तज्ञानदर्शन	२)	

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता:—

**देहाती पुस्तक भण्डार, थोक पुस्तकालय,
चावड़ी बाजार, (बड़ साबूला), देहली**

